षड्दर्शन : भारतीय चिंतन की छह धाराएँ और जीवन-दृष्टि का शाश्वत विज्ञान

भारतीय दर्शन की परंपरा विश्व की प्राचीनतम, समृद्ध और व्यवस्थित बौद्धिक परंपराओं में से एक मानी जाती है। इसे सामान्यतः षड्दर्शन कहा जाता है, अर्थात् सत्य और जीवन के रहस्य को देखने-समझने की छह दार्शनिक दृष्टियाँ। ये दर्शन केवल दार्शनिक कल्पनाएँ नहीं हैं, बल्कि मनुष्य के दुःख, अज्ञान, बंधन और मुक्ति से जुड़े व्यावहारिक प्रश्नों के गहन समाधान प्रस्तुत करते हैं। सांख्य दर्शन के प्रवर्तक महर्षि कपिल माने जाते हैं, जिन्होंने सृष्टि की व्याख्या प्रकृति और पुरुष के द्वैत सिद्धांत के माध्यम से की। उनके अनुसार प्रकृति जड़ है, जिसमें सत्त्व, रज और तम–तीन गुण निहित हैं, जबकि पुरुष चेतन, द्रष्टा और अकर्ता है। संसार का समस्त वैविध्य इन्हीं दोनों के संयोग से उत्पन्न होता है और जब पुरुष प्रकृति से अपने भेद को पहचान लेता है, तब मुक्ति संभव होती है। सांख्य दर्शन तर्कसंगत, वैज्ञानिक और विश्लेषणात्मक दृष्टि के कारण भारतीय दर्शन की आधारशिला माना जाता है।

योग दर्शन, जिसे महर्षि पतंजलि ने सूत्रबद्ध किया, सांख्य के सैद्धांतिक आधार को व्यावहारिक साधना का मार्ग प्रदान करता है। योग दर्शन का मूल उद्देश्य चित्तवृत्तियों का निरोध है, अर्थात् मन की चंचलताओं को नियंत्रित कर आत्मस्वरूप का साक्षात्कार करना। अष्टांग योग–यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि–के माध्यम से यह दर्शन शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक शुद्धि का समन्वित मार्ग प्रस्तुत करता है। आज विश्वभर में योग की स्वीकार्यता इसी दर्शन की सार्वकालिक उपयोगिता को सिद्ध करती है।

न्याय दर्शन के प्रवर्तक गौतम ऋषि माने जाते हैं, जिन्होंने ज्ञान के साधनों और तर्क की सुव्यवस्थित प्रणाली विकसित की। यह दर्शन मानता है कि अज्ञान ही दुःख का मूल कारण है और सम्यक ज्ञान से ही मोक्ष संभव है। प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान और शब्द–ये चार प्रमाण न्याय दर्शन की विशेषता हैं। तर्क, वाद-विवाद और प्रमाण-विश्लेषण की सुदृढ़ परंपरा ने भारतीय बौद्धिक जगत को तार्किक अनुशासन प्रदान किया, जिसका प्रभाव आगे के सभी दर्शनों पर स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

वैशेषिक दर्शन, जिसके प्रवर्तक कणाद ऋषि माने जाते हैं, सृष्टि की संरचना को सूक्ष्मतम तत्वों के माध्यम से समझाता है। यह दर्शन पदार्थ, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष और समवाय जैसे तत्त्वों का विश्लेषण करता है तथा परमाणु सिद्धांत के माध्यम से भौतिक जगत की व्याख्या करता है। भारतीय दर्शन में पदार्थ और विज्ञानसम्मत चिंतन की जो परंपरा दिखाई देती है, उसका मूल आधार वैशेषिक दर्शन ही है।

मीमांसा दर्शन, जिसे जैमिनी ने प्रतिपादित किया, वैदिक कर्मकांड और धर्म के व्यावहारिक स्वरूप पर केंद्रित है। यह दर्शन वेदों की अपौरुषेयता में विश्वास रखता है और मानता है कि यज्ञ, कर्म और विधि-विधान के माध्यम से लौकिक तथा पारलौकिक कल्याण संभव है। मीमांसा दर्शन ने धर्म की व्याख्या को कर्म और कर्तव्य के ठोस आधार पर स्थापित किया, जिससे सामाजिक व्यवस्था और नैतिक अनुशासन को बल मिला।

षड्दर्शन की परंपरा को पूर्णता प्रदान करता है वेदान्त दर्शन, जिसके प्रवर्तक के रूप में बादरायण अथवा महर्षि व्यास का नाम लिया जाता है। वेदान्त का केंद्रीय सिद्धांत ब्रह्म और आत्मा की एकता है। उपनिषदों पर आधारित यह दर्शन अज्ञान को बंधन और ब्रह्मज्ञान को मोक्ष का साधन मानता है। आगे चलकर शंकराचार्य, रामानुजाचार्य और माध्वाचार्य ने अद्वैत, विशिष्टाद्वैत और द्वैत जैसी व्याख्याएँ प्रस्तुत कर वेदान्त को और भी समृद्ध बनाया।

इस प्रकार षड्दर्शन केवल दार्शनिक मतों का संग्रह नहीं, बल्कि मानव जीवन के समग्र विकास की वैज्ञानिक, नैतिक और आध्यात्मिक रूपरेखा है। ये दर्शन तर्क और अनुभूति, कर्म और ज्ञान, विज्ञान और अध्यात्म के बीच संतुलन स्थापित करते हैं। आज के यांत्रिक और तनावग्रस्त युग में भी षड्दर्शन मानव को आत्मबोध, विवेक और शाश्वत शांति का मार्ग दिखाने में पूर्णतः सक्षम हैं

– डॉ रामानुज पाठक
सतना म प्र

आईआरपीआरए- 40 अंडर 40: रीजनल पीआर में उत्कर्ष कार्य के एवज में विभिन्न क्षेत्रों के युवा पीआर प्रोफेशनल्स सम्मानित

इंदौर। बहुप्रतीक्षित इंडियाज़ रीजनल पीआर अवॉर्ड्स (आईआरपीआरए)- 40 अंडर 40 अपने चौथे संस्करण के साथ एक बार फिर चर्चा में रहा, जिसका वर्चुअल आयोजन शनिवार को सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। इस मंच पर देशभर के उन चुनिंदा पीआर प्रोफेशनल्स को सम्मानित किया गया, जिन्होंने 40 वर्ष से कम उम्र में अपने उत्कृष्ट काम, सोच और स्ट्रेटेजी से पब्लिक रिलेशंस इंडस्ट्री में एक मजबूत पहचान बनाई है।

इस प्रतिष्ठित पहल का उद्देश्य रीजनल भारत से उभर रही पीआर प्रतिभाओं को पहचान देना और उन्हें राष्ट्रीय स्तर पर मंच प्रदान करना है। चयन प्रक्रिया वरिष्ठ इंडस्ट्री लीडर्स और कम्युनिकेशन एक्सपर्ट्स की ज्यूरी द्वारा की गई।

कार्यक्रम की शुरुआत एक प्रभावशाली पैनल डिस्कशन से हुई, जिसमें 'रीजनल मार्केट्स ऐज़ ग्रोथ इंजनः ब्रांड्स मेट्रो शहरों से बाहर पीआर बजट क्यों शिफ्ट कर रहे हैं' विषय पर चर्चा की गई। इस सत्र में बताया गया कि किस तरह टियर-2 और टियर-3 शहर तेजी से ब्रांड ग्रोथ के नए केंद्र बन रहे हैं और ब्रांड्स अब लोकल स्ट्रैटेजी और रीजनल पीआर नेटवर्क पर ज्यादा भरोसा कर रहे हैं।

इस वर्ष इंडियाज़ रीजनल पीआर अवॉर्ड- 40 अंडर 40 के तहत पाँच प्रमुख कैटेगरीज़ में अवॉर्ड दिए गए। इन कैटेगरीज़ के माध्यम से ब्रांड बिल्डिंग, रूरल एरिया, क्रिएटिव कैंपेन, हेल्थकेयर कम्युनिकेशन और स्टार्टअप पीआर में किए गए प्रभावशाली कार्यों के लिए रीजनल पीआर प्रोफेशनल्स को सम्मानित किया गया। 20 पीआर प्रोफेशनल्स के साथ ही साथ 20 पीआर एजेंसीज़ को भी सराहा गया।

इस पहल पर अपनी बात रखते हुए आईआरपीआरए के आयोजक पवन त्रिपाठी ने कहा, 'आईआरपीआरए का उद्देश्य हमेशा से रीजनल भारत में मौजूद प्रतिभाशाली पीआर प्रोफेशनल्स को पहचान देना रहा है। इस संस्करण में देश के अलग-अलग हिस्सों से मिली भागीदारी यह दिखाती है कि आज मजबूत और प्रभावशाली कम्युनिकेशन लीडरशिप सिर्फ मेट्रो शहरों तक सीमित नहीं है। सभी विजेताओं को शुभकामनाएँ। '

बेस्ट इमर्जिंग पीआर स्ट्रैटेजिस्ट कैटेगरी में उन प्रोफेशनल्स को सम्मानित किया गया, जिन्होंने अपनी रणनीतिक सोच और प्लानिंग के जरिए ब्रांड्स को मजबूत दिशा दी। इस कैटेगरी में निखिल स्वामी (पंजाब), प्रशांत बक्सी (गुजरात), हनी के. भार्गव (हरियाणा), राजेश हिंगू (गुजरात), स्वाति चक्रवर्ती (वेस्ट बंगाल) और श्रद्धा भट्टाचार्य (मुंबई, महाराष्ट्र) को अवॉर्ड मिला।

बेस्ट रूरल एरिया पीआर कैंपेन कैटेगरी में ग्रामीण क्षेत्रों में असरदार कम्युनिकेशन और सामाजिक जुड़ाव पर आधारित अभियानों के लिए हमद मोहम्मद अतीक रहमान बेरलाश्कर (असम) और सुरभि चौरसिया (मध्य प्रदेश) को सम्मानित किया गया।

बेस्ट क्रिएटिव एंटरटेनमेंट कैंपेन कैटेगरी में क्रिएटिव सोच और इनोवेटिव एप्रोच के साथ एंटरटेनमेंट सेक्टर में किए गए सफल पीआर कैंपेन के लिए मानसी राठी (दिल्ली), धनश्री शर्मा (दिल्ली), रिक्ती शाह पंचाल (गुजरात), अमेय अंबरकर (महाराष्ट्र) और बिजयेता त्रिपाठी (ओडिशा) को अवॉर्ड प्रदान किया गया।

बेस्ट हेल्थकेयर कम्युनिकेशन कैंपेन कैटेगरी में हेल्थकेयर सेक्टर में जागरूकता, भरोसे और प्रभावी कम्युनिकेशन स्थापित करने वाले कैंपेन्स के लिए रविंदर भारती (महाराष्ट्र), अनुभूति श्रीवास्तव, ओजस्वी शर्मा (चंडीगढ़) और गुरप्रीत नोंगकिनरिह (असम) को सम्मानित किया गया।

रामभक्ति भावना से ओत-प्रोत है आडियो एल्बम प्रभु श्रीराम की धरती

रीवा – विंध्य क्षेत्र से निकल कर विंध्य को अपने शब्द सुर स्वर लय से गौरवान्वित कर चुके गीतकार रघुवीर शरण श्रीवास्तव के गीत का आडियो एल्बम प्रभु श्रीराम की धरती 21 जनवरी को उनके अधिकृत चैनल पर प्रसारित हो रहा है। उक्त भक्तिमय गीत को लिखा सुप्रसिद्ध कामेडी कलाकार अभय शर्मा ने जबकि गाया रघुवीर शरण श्रीवास्तव व साथी कलाकारों ने वहीं हरिशरण श्रीवास्तव अंकुर श्रीवास्तव आदि ने विशेष सहयोग प्रदान किया है। यह गीत एल्बम प्रभु श्रीराम की धरा पावन पुनीत अयोध्या धाम को लेकर हैं।

आजकल के बच्चे नाज़ुक हो गए हैं

नाजुक शरीर नहीं, नाजुक मन

आज के बच्चे शारीरिक रूप से कमज़ोर नहीं हैं, बल्कि मानसिक और भावनात्मक रूप से अधिक संवेदनशील हो गए हैं। छोटी-सी डाँट उन्हें तोड़ देती है, असफलता उन्हें हताश कर देती है, और तुलना उन्हें भीतर से खोखला कर देती है। इसका बड़ा कारण है– लगातार दबाव अपेक्षाओं का बोझ और भावनात्मक संवाद की कमी माता-पिता का अति-सुरक्षात्मक रवैया आज के माता-पिता बच्चों को हर दुख, हर परेशानी से बचाना चाहते हैं। वे गिरने से पहले ही थाम लेते हैं, हारने से पहले ही रास्ता बदल देते हैं। पर सच यह है कि संघर्ष से बचाया गया बच्चा, जीवन से लड़ना नहीं सीख पाता।अब के बच्चे नाजुक हो गए हैं – एक सामाजिक, मानसिक और भावनात्मक विश्लेषण 'आजकल के बच्चे बहुत नाजुक हो गए हैं।' यह वाक्य आज हर घर, हर गली और हर पीढ़ी की बातचीत में सुनाई देता है। बुजुर्ग कहते हैं कि हमारे ज़माने में बच्चे इतने कमजोर नहीं थे, माता-पिता चिंता करते हैं कि बच्चे छोटी-छोटी बातों में टूट जाते हैं, और शिक्षक कहते हैं कि बच्चों में सहनशीलता कम होती जा रही है। लेकिन सवाल यह है कि क्या सच में आज के बच्चे नाजुक हो गए हैं, या फिर हमने उन्हें नाजुक बना दिया है? अक्सर बुजुर्गों और माता-पिता की बातचीत में एक वाक्य सुनाई देता है– 'आजकल के बच्चे बहुत नाजुक हो गए हैं। 'यह वाक्य सिर्फ़ शिकायत नहीं है, बल्कि समय के साथ बदलते बचपन, परिवेश और संस्कारों की ओर इशारा करता है। सवाल यह नहीं है कि बच्चे सच में नाजुक हो गए हैं या नहीं, बल्कि यह है कि उन्हें नाजुक क्यों बना दिया गया है।बच्चों को गिरने दीजिए, रोने दीजिए, हारने दीजिए–क्योंकि वहीं से उनमें आत्मबल पैदा होता है।

पहले का बचपन और आज का बचपन

पहले के बच्चे सीमित साधनों में पले-बढ़े। गिरते थे, चोट लगती थी, फिर उठकर चलना सीखते थे।बिजली चली जाए तो अंधेरे में खेल लेते थे, बारिश हो जाए तो कागज़ की नाव बनाकर खुश हो जाते थे।आज के बच्चे हर सुविधा के बीच पले-बढ़े हैं–मोबाइल, टैबलेट, एसी कमरे, ऑनलाइन क्लास और तैयार मनोरंजन। सुविधा ने आराम तो दिया, लेकिन संघर्ष की आदत कम कर दी।

यह लेख केवल बच्चों की आलोचना नहीं है, बल्कि उस समाज, व्यवस्था और सोच का आईना है जिसमें आज का बचपन पल रहा है।

बचपन का बदलता स्वरूप कुछ दशक पहले का बचपन और आज का बचपन ज़मीन-आसमान का अंतर रखता है। पहले बच्चे मिट्टी में खेलते थे, धूप-बारिश सहते थे, गिरते-उठते थे, और इन्हीं

अनुभवों से जीवन की कठोर सच्चाइयों को समझना सीखते थे। अभाव थे, लेकिन आत्मनिर्भरता थी। खिलौने कम थे, लेकिन कल्पनाशक्ति अधिक थी। आज का बच्चा सुविधाओं के बीच बड़ा हो रहा है। खिलौनों की जगह गैजेट हैं, मैदान की जगह स्क्रीन है, और रिश्तों की जगह वर्चुअल दुनिया। सुविधाओं ने जीवन को आसान तो बनाया है, पर बच्चों के भीतर से संघर्ष की आदत को धीरे-धीरे खत्म कर दिया है।

शारीरिक नहीं, मानसिक नाजुकता

यह कहना गलत होगा कि आज के बच्चे शारीरिक रूप से कमज़ोर हैं। आज चिकित्सा, पोषण और तकनीक के कारण बच्चे पहले से अधिक स्वस्थ हैं। असली नाजुकता मन और भावनाओं में दिखाई देती है। छोटी-सी असफलता बच्चों को निराश कर देती है। थोड़ी-सी आलोचना उन्हें भीतर से तोड़ देती है। परीक्षा में कम अंक, दोस्त की बात, या माता-पिता की डाँट–सब कुछ उनके मन पर गहरा असर डालता है। आज के बच्चे भावनात्मक रूप से अधिक संवेदनशील हैं, क्योंकि उनसे अपेक्षाएँ बहुत अधिक हैं, लेकिन उन्हें समझने वाला समय बहुत कम है।

अत्यधिक अपेक्षाओं का बोझ

आज का बच्चा केवल अपने सपनों का बोझ नहीं ढो रहा, वह माता-पिता के अधूरे सपनों, समाज की अपेक्षाओं और तुलना की तलवार के नीचे जी रहा है।

'तुम्हें डॉक्टर बनना है।' 'फलाँ के बच्चे ने टॉप किया, तुम क्यों नहीं?' 'इतनी सुविधाएँ देने के बाद भी तुमसे यह नहीं हुआ?' ये वाक्य अनजाने में बच्चों के मन में यह भाव भर देते हैं कि उनका मूल्य सिर्फ़ उनकी सफलता से जुड़ा है। असफलता उन्हें यह महसूस कराती है कि वे अपने माता-पिता और समाज के लिए बोझ हैं।

अति-सुरक्षात्मक पालन-पोषण

आज के माता-पिता बच्चों को हर कठिनाई से बचाना चाहते हैं। वे चाहते हैं कि बच्चा कभी गिरे नहीं, कभी रोए नहीं, कभी असफल न हो। पर जीवन का सच यह है कि जो गिरना नहीं सीखता, वह संभलना भी नहीं सीख पाता। हर समस्या का हल तुरंत देना, हर दुख से पहले ढाल बन जाना–यह सब बच्चों को असहाय बना देता है। जब वे वास्तविक जीवन में संघर्ष से सामना करते हैं, तो टूट जाते हैं।

डिजिटल युग और भावनात्मक अकेलापन

मोबाइल, इंटरनेट और सोशल मीडिया आज के बच्चों की दुनिया का बड़ा हिस्सा बन चुके हैं। बच्चे स्क्रीन पर हँसते हैं, वीडियो देखते हैं, गेम खेलते हैं, लेकिन भीतर से अकेले होते जा रहे हैं। घर में सब साथ होते हुए भी कोई साथ नहीं होता। माँ-बाप काम में व्यस्त हैं, बच्चे मोबाइल में। संवाद कम हो गया है, समझ कम हो गई है। यह भावनात्मक दूरी बच्चों को भीतर से नाजुक बना रही है।

सोशल मीडिया और तुलना की बीमारी

सोशल मीडिया बच्चों के मन में एक झूठी दुनिया बना रहा है–जहाँ हर कोई खुश, सफल और परिपूर्ण दिखता है। बच्चे अपनी सामान्य ज़िंदगी की तुलना उस चमकदार दुनिया से करने लगते हैं और खुद को कमतर समझने लगते हैं। यह तुलना आत्मविश्वास को धीरे-धीरे खत्म कर देती है। बच्चा हँसता है, पर भीतर से खुद से हार चुका होता है।

अनुशासन बनाम डर

पहले अनुशासन सिखाया जाता था, आज डर पैदा किया जाता है। डाँट, मार, ताने और तुलना–इन सबको अनुशासन का नाम दे दिया गया है। डर में पला बच्चा आज्ञाकारी तो बन सकता है, पर आत्मविश्वासी नहीं। वह हर फैसले में डरता है, हर चुनौती से भागता है, और हर असफलता में खुद को दोषी मान लेता है।

शिक्षा व्यवस्था का दबाव

आज की शिक्षा प्रतिस्पर्धा पर आधारित है। रैंक, मार्क्स, रिज़ल्ट–सब कुछ बच्चे की पहचान बन गया है। पढ़ाई ज्ञान नहीं, दौड़ बन गई है। इस दौड़ में कई बच्चे पीछे छूट जाते हैं और खुद को बेकार समझने लगते हैं। हर बच्चा एक जैसा नहीं होता, लेकिन व्यवस्था सबको एक ही साँचे में ढालना चाहती है।

क्या आज के बच्चे सच में कमजोर हैं?

नहीं। आज के बच्चे कमजोर नहीं हैं, वे असमझे दबावों के शिकार हैं। उनके भीतर सीखने की क्षमता है, समझ है, संवेदनशीलता है। बस उन्हें समझने, सुनने और स्वीकार करने की ज़रूरत है।

संवेदनशीलता कमजोरी नहीं, बल्कि ताकत हो सकती है–अगर उसे सही दिशा मिले।

हमें क्या बदलना होगा?

1. संवाद बढ़ाएँ - बच्चों से दोस्त की तरह बात करें
2. तुलना बंद करें - हर बच्चा अलग है
3. असफलता को स्वीकार करें - यही जीवन का शिक्षक है
4. समय दें - मोबाइल से ज़्यादा बच्चों को
5. मूल्य सिखाएँ - सिर्फ़ सफलता नहीं, इंसानियत भी। अब के बच्चे नाजुक इसलिए नहीं हैं कि वे कमजोर हैं, बल्कि इसलिए कि हमने उन्हें मजबूत बनने का अवसर नहीं दिया। अगर हम उन्हें गिरने दें, संघर्ष करने दें, और बिना शर्त स्वीकार करें–तो यही बच्चे। कल की सबसे मजबूत पीढ़ी बन सकते हैं। बच्चों को बदलने से पहले हमें अपनी सोच बदलनी होगी।

ऊषा शुक्ला
इफ़को आँवला बरेली यूपी

हिंदी चेतना शिखर-2026 : दिल्ली में वैश्विक हिंदी, संस्कृति और सौहार्द का भव्य उत्सव

अंतर्राष्ट्रीय विभूतियाँ हुई सम्मानित

नई दिल्ली, 19 जनवरी। राजधानी के राजेंद्र भवन ऑडिटोरियम में हिंदी चेतना शिखर -2026 अंतरराष्ट्रीय सम्मान समारोह का भव्य, गरिमामयी एवं ऐतिहासिक आयोजन हुआ।

यह आयोजन देवनागरी उत्थान फाउंडेशन,धरा धाम इंटरनेशनल, पं. तिलक राज शर्मा स्मृति ट्रस्ट (अमेरिका) एवं एशिया बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स (श्रीलंका) के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित किया गया। समारोह में देश-विदेश से पधारे शिक्षाविदों, साहित्यकारों, सामाजिक चिंतकों, सांस्कृतिक दूतों एवं बुद्धिजीवियों की उल्लेखनीय उपस्थिति रही।

कार्यक्रम में अंतरराष्ट्रीय सांस्कृतिक दूत रसायाचार्य डॉ. आई. मेड धर्मायसा, संयुक्त राष्ट्र से संबद्ध आधिकारिक प्रतिनिधि जनरल प्रो. जसवीर सिंह (हलह / ढ्ढक्क-ढ्ढलह, ग्र), अंतरराष्ट्रीय हिंदी-देवनागरी प्रवर्तक डॉ. इंदरजीत शर्मा अंतरराष्ट्रीय साहित्यकार एवं

योग-ध्यान प्रशिक्षक (माल्टा) डॉ. चोगशुआ नोगा झांग, संस्कृत साहित्य विभाग के वरिष्ठ आचार्य प्रो. (डॉ.) देवेश कुमार मिश्र, तथा धरा धाम इंटरनेशनल के प्रमुख मानद कुलपति, जगत धर्म चक्रवर्ती एवं सौहार्द शिरोमणि संत डॉ. सौरभ पाण्डेय (धरा धाम विश्व सद्भाव पीठ) एवं अंतरराष्ट्रीय लेखक,पत्रकार विचारक एवं धरा गवर्नर डॉ. शंभु पंवार मंचासीन रहे।कार्यक्रम का कुशल, ओजस्वी एवं प्रभावी संचालन शिक्षाविद् डॉ. निशा अग्रवाल द्वारा ने किया। आयोजन को सफल बनाने में देवनागरी उत्थान फाउंडेशन के संस्थापक डॉ. सुनील दुबे, धरा धाम इंटरनेशनल के राष्ट्रीय संयोजक डॉ. प्रेम प्रकाश पाण्डेय, एशिया बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स के प्रतिनिधि डॉ. नारायण यादव, डॉ. बी. एम. उवैस, डॉ. सचिदानंद झा 'शांडिल्य', डॉ. शंभू पंवार सहित अनेक पदाधिकारियों एवं आयोजक सदस्यों की महत्वपूर्ण भूमिका रही। समारोह में हिंदी भाषा, देवनागरी लिपि, शिक्षा, साहित्य, संस्कृति, समाजसेवा एवं मानवीय मूल्यों के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान देने वाली विभूतियों को सम्मानित किया गया। इस अवसर पर 15 विभूतियों को लोक मंगल विभूषण (लाइफ टाइम अचीवमेंट सम्मान),51 विभूतियों को भारतेंदु हरिश्चंद्र अंतरराष्ट्रीय गौरव सम्मान,21 विभूतियों को धरा धाम गौरव सम्मान,4 जनों को लोक गौरव सम्मान तथा 7 विभूतियों को विद्या वाचस्पति मानद उपाधि प्रदान की गई। इनके अलावा शिक्षाविद् डॉ. निशा अग्रवाल एवं डॉ. राकेश वशिष्ठ को एशिया बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स (श्रीलंका) द्वारा वर्ल्ड रिकॉर्ड सर्टिफिकेट से सम्मानित किया गया।कार्यक्रम में नंद कुमार, सविनय पाण्डेय, डेविड, विनय विंसेंट, टाइगर जगजीत निराला, पूजा पाल, साक्षी तिवारी सहित अनेक गणमान्य अतिथि उपस्थित रहे।

डॉ. शंभु पंवार (वर्ल्ड रिकॉर्ड होल्डर)
अंतरराष्ट्रीय लेखक, पत्रकार–विचारक)

प्रख्यात तकनीकी विशेषज्ञ, विशिष्ट अभियंता आचार्य दिट्टकवि विश्व सुन्दर कामेश्वर राव का निधन

विशाखापट्टनम। गायत्री विद्या परिषद से जुड़े प्रख्यात तकनीकी विशेषज्ञ, विशिष्ट अभियंता, शिक्षाविद्, कार्यकारिणी सदस्य एवं पूर्व सचिव आचार्य दिट्टकवि विश्व सुन्दर कामेश्वर राव का रविवार मध्यरात्रि अल्पकालिक बीमारी के बाद निधन हो गया। वे पिछले चार दिनों से हैदराबाद के एक निजी अस्पताल में उपचाराधीन थे, जहाँ उन्होंने अंतिम सांस ली।

पूर्वी गोदावरी ज़िले के द्राक्षारामम में जन्मे आचार्य कामेश्वर राव ने अपना बाल्यकाल द्राक्षारामम-काकीनाडा में बिताया। इंजीनियरिंग में प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होकर उन्होंने टाटा स्टील के जमशेदपुर, भिलाई, पारादीप, जामांदोड़ी, नागार्जुनसागर परियोजनाओं तथा विशाखा इस्पात संयंत्र के ब्लास्ट फर्नेस रोलिंग मिल्स सहित कई केंद्रीय सरकारी परियोजनाओं और पोर्ट निर्माण कार्यों में महत्वपूर्ण सेवाएँ दीं। गायत्री प्रोजेक्ट्स में मुख्य अभियंता (चीफ इंजीनियर) के रूप में उन्होंने निर्माण क्षेत्र में अपनी विशिष्ट पहचान स्थापित की।

शिक्षा क्षेत्र में दूरदर्शी योगदान देते हुए, गायत्री विद्या परिषद की कार्यकारिणी में रहते हुए उन्होंने एम.एल.बी.टी. स्कूल सहित विभिन्न संस्थानों में आधुनिक प्रयोगशालाएँ, कृत्रिम बुद्धिमत्ता तथा वैकल्पिक ऊर्जा संसाधनों जैसी सुविधाओं के विकास में अहम भूमिका निभाई। बा-बापू सेवा संघ के माध्यम से उन्होंने वंचित महिलाओं के उत्थान हेतु भी सेवाएँ प्रदान कीं।उनका पार्थिव शरीर सोमवार सायं विशाखापट्टनम लाया गया। परिवारजनों के अनुसार अंतिम संस्कार मंगलवार सुबह 9 बजे किया जाएगा।गायत्री विद्या परिषद ईश्वर से प्रार्थना करती है कि दिवंगत आत्मा को शाश्वत शांति प्रदान करें तथा शोकाकुल परिवार को इस अपूरणीय क्षति को सहन करने की शक्ति और धैर्य दें।